अध्याय 41

परमेश्वर का दूसरा संदेश (भाग 2)

लिव्यातान उन अनोखे और भयभीत करने वाले में दूसरा है जिसकी चर्चा यहोवा ने इस दूसरे संदेश में की। इब्रानी बाइबल में अध्याय 41 की पहली आठ आयतें अध्याय 40 का ही अगला भाग हैं यानी उन्हें 40:25-32 नाम दिया गया है। कुछ लोग अध्याय 41 को ''पुस्तक का सबसे जटिल अध्याय'' मानते हैं।[1] यह एक भयंकर जंतु का वर्णन करता है जिसे लिव्यातान कहा गया है। ''लिव्यातान'' इब्रानी शब्द का लिप्यंत्रण है, यानी इसका अनुवाद करने के बजाय इसे ज्यों का त्यों हिंदी में लिख दिया गया है (3:8 पर टिप्पणियां देखें)। जलगज के विवरण से इस जंतु के विवरण के लिए तीन गुणा अधिक जगह दी गई है। फ्रांसिस आई. एंडरसन ने बताया, ''जहां तक इसकी लम्बाई की बात है, जिससे आधुनिक पाठकों की ओर से शिकायतें भी आई हैं, हमें लगता है कि सबसे भयंकर जानवर की सबसे लम्बी कविता को एक भय भयंकर चरम देने के लिए अंत तक जानबूझकर रहने दिया गया है।''[2]

अय्यूब को लिव्यातान को पकड़ने की चुनौती दी गई (41:1-11)

[1]''फिर क्या तू लिव्यातान अथवा मगर को बँसी के द्वारा खींच सकता है, या डोरी से उसकी जीभ दबा सकता है? [2]क्या तू उसकी नाक में नकेल लगा सकता, या उसका जबड़ा कील से बेध सकता है? [3]क्या वह तुझ से बहुत गिड़गिड़ाएगा? क्या वह तुझ से मीठी बातें बोलेगा? [4]क्या वह तुझ से वाचा बाँधेगा कि वह सदा तेरा दास रहे? [5]क्या तू उससे ऐसे खेलेगा जैसे चिड़िया से, या अपनी लड़कियों का जी बहलाने को उसे बाँध रखेगा? [6]क्या मछुओं के दल उसे बिकाऊ माल समझेंगे? क्या वह उसे व्यापारियों में बाँट देंगे? [7]क्या तू उसका चमड़ा भाले से, या उसका सिर मछुवे के तिरशूलों से बेध सकता है? [8]तू उस पर अपना हाथ ही रखे, तो लड़ाई को कभी न भूलेगा और भविष्य में कभी ऐसा न करेगा। [9]देख, उसे पकड़ने की आशा निष्फल रहती है; उसके देखने ही से मन कच्चा पड़ जाता है। [10]कोई ऐसा साहसी नहीं, जो उसको भड़काए। फिर ऐसा कौन है जो मेरे सामने ठहर सके? [11]किसने मुझे पहले दिया है, जिसका बदला मुझे देना पड़े! देख, जो कुछ सारी धरती पर है सो मेरा है।''

आयतें 1, 2. ''फिर क्या तू लिव्यातान अथवा मगर को बँसी के द्वारा खींच सकता है।'' अय्यूब 3:8 में लिव्यातान का इस्तेमाल एक काल्पनिक जंतु के रूप में किया गया है जिसे धार्मिक ढोंगी लोगों को चौकाने के लिए बताते थे कि उसके पास शक्ति है। परन्तु इस अध्याय के विस्तृत विवरणों में मगरमच्छ के जैसे वास्तविक जंतु का वर्णन किया जा रहा है (देखें *परिशिष्ट:*

बेहेमोथ और लिव्यतान, पृष्ठ 198-99)। बहुतायत में मगरमच्छ नील में पाए जाते थे और आगे का विवरण उसकी जानवर तथा इलाके का संकेत देता हुआ लगता है।

लिव्यातान को पकड़ने से सम्बन्धित इन आयतों वाले प्रश्नों में नकारात्मक उत्तर का संकेत है। बताई गई **डोरी** सरकंडों को लपेटकर बनाई जाती थी। यह इतनी कमज़ोर होती होगी कि इससे मगरमच्छ की **नाक** में से नहीं निकाला जा सकता होगा, यदि कोई उसके इतना करीब जा सकता हो। **बंसी** का इस्तेमाल मछुआरों के द्वारा किया जाता था।

मनुष्य तथा पशु बंदियों को उनकी नाक, जबड़े या होठों में से बंसी या नकेल डालकर डोरी से ले जाया जाता (2 राजाओं 19:28; 2 इतिहास 33:11; यशायाह 37:29; यहेजकेल 19:4; 38:4)। ऐसा किए जाने के उदाहरण अश्शूरी राहतों में पाए जा सकते हैं एक उदाहरण इसरदोन के तेले का है जो पराजित होने वाले राजाओं (आकार में बौने) को उनके नाक में नकेल डाले हुए दिखाया गया है।[3]

आयत 3. गिड़गिड़ाना सहायता के लिए विनती या प्रार्थना करने को कहा गया है। **मीठी बातें** विनम्रता से कही गई बाते हैं जो मानवीय कैदी अपने बंदीकर्त्ता के साथ करता हो सकता है। दोनों ही अभिव्यक्तियां कमज़ोरी को दर्शाती हैं। रॉबर्ट एल. आर्डन ने लिखा है कि ''किसी मगरमच्छ के अय्यूब या किसी ओर से 'दया की भीख मांगने' या उसके सामने 'विनम्रतापूर्वक' शब्दों से विनती करने की बात सोचना बेतुका है।''[4]

आयत 4. वाचा दो व्यक्तियों या जातियों के बीच हुआ समझौता या संधि होती थी (31:1 पर टिप्पणियां देखें)। सम्भवतया इस प्रकार की वाचा प्राचीनकाल में अधिकतर किए जाने वाले समझौते होते थे जिसमें से कमज़ोर पक्ष अपने से ताकतवर पक्ष से सुलह करना चाहता था। फिर वह **सदा दास** बन जाता। मूसा की व्यवस्था में करारबद्ध सेवक को पक्के तौर पर सेवक बनने के लिए अपनी स्वतन्त्रता को छोड़ देने की अनुमति थी (निर्गमन 21:5, 6; व्यवस्थाविवरण 15:16, 17)। क्या किसी मगरमच्छ को इस प्रकार से पालतू बनाया जा सकता था जिससे वह अय्यूब का मित्र या सेवक बन जाता? बिल्कुल नहीं!

आयत 5. ''क्या तू उससे ऐसे खेलेगा जैसे चिड़िया से, या अपनी लड़कियों का जी बहलाने को उसे बाँध रखेगा?'' स्पष्टतया यहोवा को नहीं लगा कि अय्यूब ऐसा कुछ करेगा। प्राचीन निकटपूर्व में बच्चों को पंडुकों तथा चिड़ियों के साथ खेलना अच्छा लगता था। छोटी ''लड़कियां'' पक्षी की टांग से धागा बांध देती थीं जिससे वह उड़कर दूर न जाएं या किसी पालतू जानवर को घुमाने के लिए कमज़ोर सी रस्सी बांध देती होंगी। मगरमच्छ के साथ ऐसा व्यवहार करने की बात सोचना बेतुका होगा।

आयत 6. व्यापारियों उनके बीच नाव के मालिक मछुआरों के समूह को कहा गया (देखें लूका 5:6-10)। रात भर मछलियां पकड़ने के बाद वे अपना माल **व्यापारियों** को बेचने के लिए **बांट** लेने के लिए एक दूसरे से सौदेबाजी करते होंगे। मछुआरों और व्यापारियों के मगरमच्छ पर मोलभाव करने और उसके उन्हें सहजता से देखने का विचार बेतुका है।

आयतें 7-9. इन आयतों में मगरमच्छ को **भाले से** या **तिरशूलों से** पकड़ने की कोशिश करने का वर्णन है। कोई मछेरा ऐसे कमज़ोर औजार इस्तेमाल करने के लिए चाहे इतना निकट चला भी जाए तो **लड़ाई को कभी न भूलेगा** यानी यदि वह इसे बताने के लिए जीवित रहे। एच. एच. रोअले ने कहा है, ''स्पष्ट आदेशों के द्वारा प्रभावशाली सलाह दी जाती है। लिव्यातान

के साथ बहुत निकट आने से पहले इस बात को समझ लो कि तुम क्या कर रहे हो! अपनी ऐसी मूर्खता को दोहराने के लिए कोई जीवित नहीं रहता।''[5] **उसके देखने ही से** मन में भय उत्पन्न हो जाता है जो व्यक्ति को उसके साथ लड़ने की कोशिश करने से रोकता है।

आयतें 10, 11. ''कोई ऐसा साहसी नहीं, जो उसको भड़काए। फिर ऐसा कौन है जो मेरे सामने ठहर सके?'' यहोवा ने वश में किए जा सकने वाले लिव्यातान की समस्याओं के आधार पर एक निष्कर्ष निकाला। यदि ऐसे भयंकर जंतु के साथ सामना करने की सम्भावना ही मछुआरों के मन में डर पैदा कर सकती है तो कोई सृजनहार के सामने उससे लड़ने के लिए उसे चुनौती देने का साहस करने की कल्पना कैसे कर सकता है? **जो कुछ सारी धरती पर है** वह सब यहोवा का है और उसी के द्वारा सृजा गया था, तो फिर वह किसका कर्जदार है? परमेश्वर के विरुद्ध दबाव डालने का किसी का कोई दावा नहीं है।

लिव्यातान का एक विवरण (41:12-34)

लिव्यातान का कवच (41:12-17)

[12]''मैं उसके अंगों के विषय, और उसके बड़े बल और उसकी बनावट की शोभा के विषय चुप न रहूँगा। [13]उसके ऊपर के पहिरावे को कौन उतार सकता है? उसके दाँतों की दोनों पाँतियों अर्थात जबड़ों के बीच कौन आएगा? [14]उसके मुख के दोनों किवाड़ कौन खोल सकता है? उसके दाँत चारों ओर से डरावने हैं। [15]उसके छिलकों की रेखाएँ घमण्ड का कारण हैं; वे मानो मुहरबन्द किए हुए हैं। [16]वे एक दूसरे से ऐसे जुड़े हुए हैं, कि उनमें वायु भी नहीं घुस सकती। [17]वे आपस में मिले हुए और ऐसे सटे हुए हैं, कि अलग-अलग नहीं हो सकते।''

आयतें 12, 13. यहोवा ने **उसके अंगों**, **उसके बड़े बल** और **उसकी बनावट की शोभा** का उल्लेख करते हुए लिव्यातान का विवरण जारी रखा। इस जंतु का शरीर उसके बचाव का काम करता है; कोई **उसके पहरावे को उतार** नहीं सकता। NASB के अनुसार उसकी पपड़ियों को प्राचीन निकट पूर्व में योद्धाओं द्वारा पहने जाने वाले **दो पांतियों** वाले कुरते से मिलाया गया है। यह अनुवाद मेसोरी टैक्स्ट में सुधार करके यूनानी सप्तति अनुवाद के अनुसार किया गया है। इब्रानी शब्द *resen* (*रेसेन*), जिसका अर्थ ''लगाम'' (KJV) या ''जबड़ा'' (ASV) है, *siryon* (*सिरयोन*) किया गया, जिसका अर्थ है ''कवच।'' परन्तु बिना सुधार के वचन स्पष्ट है। NIV में कहा गया है, ''उसके पास नकेल लेकर कौन जाएगा?'' NJPSV में है, ''उसके जबड़ों की परतों में कौन घुस सकता है?''

आयत 14. मगरमच्छ के जबड़ों को कवि की भाषा में **उसके मुख के ... किवाड़** कहा गया है। उसके **दांत ... डरावने** हैं। रोअले ने लिखा है, ''ऊपरी जबाड़े में छत्तीस और निचले मे तीस हैं।''[6] तीखे और दर्दनाक पीड़ा देने में सक्षम होने के कारण वे आक्रमणकारी हथियार का काम करते हैं। आल्डन ने बताया, ''इस जानवर के छात्र ध्यान दिलाते हैं कि जबड़ों को अकेले मानवीय हाथ के द्वारा पकड़ा जा सकता है, परन्तु उनमें इतनी जबर्दस्त शक्ति है कि इस जलचर

के बहुत से दातों से ढोर को पानी में खींचकर दो फाड़ किया जा सकता है।''[7]

आयतें 15-17. लिव्यातान के **छिलकों** को **मिले हुए** बताया गया है। **एक दूसरे से** वाक यांश मूलतया ''[जैसे] कोई आदमी अपने भाई से'' है। ये छिलकों को **अलग-अलग नहीं हो सकते** क्योंकि वे आपस में **सटे हुए हैं**। उसके शरीर की बनावट शिकारियों के लिए अपने हथियारों के साथ उसके छिपने की जगह घुसना कठिन बना देती है। मगरमच्छ के ''छिलकों'' को आज ''ढाल'' के रूप में जाना जाता है। अंग्रेज़ी के लिए इस अर्थ वाला शब्द ''scutes [स्कूटस]'' लातीनी भाषा से *scutum*, स्कूटम से लिया गया है।

लिव्यातान की आग (41:18-24)

[18]''फिर उसके छींकने से उजियाला चमक उठता है, और उसकी आँखें भोर की पलकों के समान हैं। [19]उसके मुँह से जलते हुए पलीते निकलते हैं, और आग की चिनगारियाँ छूटती हैं। [20]उसके नथुनों से ऐसा धुआँ निकलता है, जैसा खौलती हुई हाँड़ी और जलते हुए नरकटों से। [21]उसकी साँस से कोयले सुलगते, और उसके मुँह से आग की लौ निकलती है। [22]उसकी गर्दन में सामर्थ्य बनी रहती है, और उसके सामने डर नाचता रहता है। [23]उसके मांस पर मांस चढ़ा हुआ है, और ऐसा आपस में सटा हुआ है जो हिल नहीं सकता। [24]उसका हृदय पत्थर सा दृढ़ है, वरन् चक्की के निचले पाट के समान दृढ़ है।''

इन आयतों में यहोवा लिव्यातान के छिलकों से उसके आठ और गुणों की चर्चा करने के लिए आगे बढ़ा: उसकी छींकें, आंखें, मुंह, नथुने, सांस, गर्दन, मास, और हृदय।

आयत 18. मगरमच्छ के **छींकने** पर निकलने वाले वाष्प से सूर्य के **उजियाले** में पानी की छोटी छोटी बूंदें **चमक** उठती हैं। **उसकी आंखें भोर की पलकों के समान** बताया जाना ''अलंकारिक हो सकता है जो यह सुझाव देता है कि जो मिस्रियों द्वारा मगरमच्छ के पानी के ऊपर निकलने पर उसकी आंखों के लाल हो जाने के कारण उन्हें और उसकी पलकों को भोर होने की घोषणा करने वाली मानते थे।''[8] जॉन ई. हार्टले ने लिखा है, ''प्राचीन मिस्री चित्र लेखों में मगरमच्छ की आंखों का अर्थ सुबह की लाली के लिए माना जाता था।''[9]

आयतें 19-21. मगरमच्छ जब पानी में से बाहर आता है तो यह पानी को अपने **मुंह से** और **नथुनो से** गर्म धार में फैलाता है जो सूर्य की रौशनी में **आग** सी लगती हैं। ऐसी ही छंदबद्ध भाषा पुराने नियम में परमेश्वर का विवरण है (2 शमूएल 22:9; भजन संहिता 18:8)।

आयतें 22-24. मगरमच्छ का सिर उसके शरीर के साथ सीधे तौर पर इस प्रकार से जुड़ा है जिससे **उसकी गर्दन** को बड़ी **सामर्थ** मिलती है। **उसके मांस पर मांस चढ़ा, आपस में सटा हुआ है जो हिल नहीं सकता**। ''उसका हृदय पत्थर सा दृढ़ है।'' आगे फिर इसे **चक्की के निचले पाट** से यानी पीसने वाले पाट से मिलाया गया है जिसे रोटी बनाने के लिए गेहूं पीसने के लिए लगाया गया था। इसे बड़ी मज़बूती के साथ लगाया जाना आवश्यक था और लगातार इस्तेमाल किए जाने के कारण उसे मज़बूत बनाए रखने के लिए इसे बड़ा कठोर होना आवश्यक था। ''हृदय'' मगरमच्छ के वास्तविक हृदय उसके ''सीने'' (NIV; NCV), या उसके ज़िद्दी होने के लिए हो सकता है।

लिव्यातान की निडरता (41:25-34)

[25]''जब वह उठने लगता है, तब सामर्थी भी डर जाते हैं, और डर के मारे उनकी सुध-बुध लोप हो जाती है। [26]यदि कोई उस पर तलवार चलाए, तो उससे कुछ न बन पड़ेगा; और न भाले और न बर्छी और न तीर से। [27]वह लोहे को पुआल सा, और पीतल को सड़ी लकड़ी सा जानता है। [28]वह तीर से भगाया नहीं जाता, गोफन के पत्थर उसके लिये भूसे से ठहरते हैं। [29]लाठियाँ भी भूसे के समान गिनी जाती हैं; वह बर्छी के चलने पर हँसता है। [30]उसके निचले भाग पैने ठीकरे के समान हैं, कीच पर मानो वह हेंगा फेरता है। [31]वह गहिरे जल को हंडे के समान मथता है: उसके कारण नील नदी मरहम की हाँड़ी के समान होती है। [32]वह अपने पीछे चमकीली लीक छोड़ता जाता है। गहिरा जल मानो श्वेत दिखाई देने लगता है। [33]धरती पर उसके तुल्य और कोई नहीं है, जो ऐसा निर्भय बनाया गया है। [34]जो कुछ ऊँचा है, उसे वह ताकता ही रहता है, वह सब घमण्डियों के ऊपर राजा है।''

आयत 25. सामर्थी का अनुवाद *'elim* (*ऐलिम*) से किया गया है, जो आम तौर पर ''परमेश्वर,'' ''ईश्वरों'' या ''स्वर्गदूतों'' के लिए इस्तेमाल होता है। कई बार इसे ''ताकतवर और रुतबे वाले लोगों के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है।''[10] ताकतवर से ताकतवर लोग भी **डर** से कांप उठते हैं जब मगरमच्छ अपने आपको जगाता है। उनका ''डर'' उसकी निडरता से उलट है (41:33)। **डर जाते हैं** का अनुवाद ''आंतक के कारण वे अपने और निकट आ जाते हैं।''[11] कोई भी मगरमच्छ के साथ पंगा नही लेना चाहता!

आयतें 26-29. मगरमच्छ को काबू में करने या उसे मार डालने की कोशिश के लिए हथियार बेकार हैं, चाहे वे **लोहे** से बने हों या **पीतल** से (40:18 पर टिप्पणियां देखें)। **तलवार**, **भाले**, **बर्छी**, और **तीर** को वह **तुआल** या **सड़ी लकड़ी सा जानता** है। **तीर**, **गोफन**, **लाठिया**, और **बर्छी** सब उसे नुकसान न देने वाली छोटी छोटी बातें लगती हैं जिन पर वह **हंसता** है। क्रिया शब्द ''हंसता'' (*śachaq*, *साचाक़*) जिसका अनुवाद ''कुछ नहीं समझना'' और ''कलोल करना'' हुआ है, जानवरों के वर्णन के लिए ही इस्तेमाल हुआ है (39:7, 18, 22; 40:20; 41:5, 29)।

आयत 30. ठीकरे मिट्टी के टूटे हुए बर्तन होते थे (देखें 2:8)। **हेंगा** पत्थर या लोहे जड़ित लकड़ी का स्लेड होता था जिसके नीचे कील होते थे। इसे बैलों द्वारा दानों को भूसी से अलग करने के लिए अनाज के ऊपर खींचा जाता था (1 इतिहास 21:23; यशायाह 28:27; 41:15; आमोस 1:3)। ''कोई मगरमच्छ बिना निशान छोडे कीचड़ से पार नहीं जा सकता था क्योंकि उसकी खुरदरी, पपड़ीदार चमड़ी वाला उसका पेट और पूंछ 'गाहने वाले स्लेज' की तरह खींचते हैं।''[12]

आयतें 31, 32. मगरमच्छ जब तेजी से पानी में चलता है तो वह **गहिरे जल को हंडे के समान मथता है**। पानी के बीच में उसकी हलचल के **पीछे चमकीली लीक**। झाग के निशान से पानी **श्वेत** हो जाता है, जो ऐसा गुण है जिसका प्राचीनकाल से आदर करते थे (लैव्यव्यवस्था 19:32; नीतिवचन 16:31)।

आयत 33. ''धरती पर उसके तुल्य और कोई नहीं है, जो ऐसा निर्भय बनाया गया

है।'' परमेश्वर के जंतुओं में अधिक जंतु लोगों से दूर रहते हैं, पर मगरमच्छ ऐसा नहीं है। वह सचमुच में अनूठा है।

आयत 34. ''जो कुछ ऊँचा है, उसे वह ताकता ही रहता है, वह सब घमण्डियों के ऊपर राजा है।'' उन सब जानवरों में से जो अपनी सामर्थ और साहस पर गर्व कर सकते हैं, लिव्यातान ''राजा'' है। ''सब घमण्डियों'' वाक्यांश पुस्तक में सबसे पहले सिंह के सम्बन्ध में मिलता है (पर टिप्पणियां देखें 28:7, 8)। आल्डन ने लिखा है,

> इस प्रकार अय्यूब को परमेश्वर के भाषण समाप्त होते हैं। उसने अय्यूब के मामले के बारे में कुछ नहीं कहा बल्कि इसके बजाय और कई जानवरों की बात की जिन पर अय्यूब का कोई नियन्त्रण नहीं था, विशेषकर ड्रैगन जैसे लिव्यातान का जो सबसे खतरनाक है, पालतु बनाए जा सकने वालों से सबसे कम और जानवरों में से सबसे खतरनाक। कुल मिलाकर संदेश है कि यह परमेश्वर की सृष्टि हैं। वे उसके नियन्त्रण में हैं। वह सर्वशक्तिमान है। अय्यूब के लिए अतिरिक्त सबक यह था कि इन दायरों में उसका कोई अधिकार नहीं था। वह भी परमेश्वर के द्वारा बनाया गया एक जीव था जिसे उसके अधिकार में रहना आवश्यक था। अय्यूब की बहुत सी बातें परमेश्वर के बजाय जिसने बड़ी सहजता से संसार को सृजा और अय्यूब के संसार और समस्त या सारे विश्व को अपने वश में रखा है, अपने संसार को हिला देने वाले क्रूध जीव लिव्यातान के साथ बहुत मेल खाती थीं।[13]

प्रासंगिकता

जलगज और लिव्यातान पर विचार करें (40:15-41:34)

जलगज पर और लिव्यातान पर चाहे पक्का नहीं कहा जा सकता कि वह क्या हैं। पर आम तौर पर उन्हें दरियायी घोड़ा (या हाथी) और मगरमच्छ नाम दिए जाते हैं। इस संदर्भ में उन्हें काल्पनिक जीवों के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। आखिर परमेश्वर ने विशेष रूप में कहा कि उसने जलगज को भी बनाया और अय्यूब को बनाया (40:15)। परमेश्वर मनुष्य होने के नाते अय्यूब की निर्भरता पर फिर से ज़ोर देने के लिए दो अद्‌भुत जीवों का इस्तेमाल कर रहा था। ऐसे जीवों का प्रभु परमेश्वर ही है। अय्यूब को पूरे दिल से परमेश्वर में भरोसा रखने की चुनौती दी जा रही थी जो अपनी समस्त सृष्टि पर शासन करता है।

आज संसार में तीन अद्‌भुत जीव हैं जो आकार में अपनी अपनी श्रेणी में प्रमुख हैं। इनसे हमें अपने सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सृजनात्मक शक्ति को समझना चाहिए।

अफ्रीकी बुश एलीफेंट ज़मीन पर रहने वाले जानवरों में सबसे बड़ा है। उसकी ऊंचाई तेरह फुट तक और उसकी ऊंचाई चौबीस फुट तक हो सकती है और उसका भार ग्यारह टन तक हो सकता है। उसके विशाल कान हैं, बड़ी सी मज़बूत सूंड और ऊंचे ऊंचे नोकदार दांत। उसकी टांगें बड़े-बड़े खम्भों जैसी हैं। यदि वह घबरा जाए या गुस्से में आ जाए, तो 25 मील प्रति घंटा की गति से भाग सकता है। यदि उसे खाने के लिए पत्ते न मिलें तो यह शाकाहारी जंतु पेड़ों को गिराने के लिए अपने नोकदार दांतों का इस्तेमाल कर सकता है।

साल्टवाटर क्रोकोडाइल रेंगने वाले जंतुओं में सबसे बड़ा है। वह उत्तरी आस्ट्रेलिया तथा

दक्षिणपूर्व एशिया में पाया जाता है। ऐसे मगरमच्छ बीस फुट से भी लम्बे हो सकते हैं और उनका भार तीन हजार पौंड तक हो सकता है। वे अपने शिकार पर अचानक आकर हमला करते हैं, जो आम तौर पर पानी पीने के लिए किनारे पर आने वाले जानवर होते हैं। वे अपने बेखबर शिकार को डुबोकर पानी के अंदर रखते हैं। उनके आकार तथा शक्ति के कारण मनुष्यों के ऊपर इन मगरमच्छों के हमले आम तौर पर घातक होते हैं। आस्ट्रेलिया में जहां ऐसे मगरमच्छ पाए जाते हैं, लोगों को वहां तैरने के लिए पानी में जाने से मना करने वाली चेतावनियां टांगी जाती हैं।

समुद्र और पूरी पृथ्वी के जंतुओं में सबसे बड़ा ब्ल्यू व्हेल है। ये स्तनधारी जंतु एक सौ से अधिक फुट से लम्बा और दो सौ टन से अधिक वज़नी हो सकता है। ब्ल्यू व्हेल लम्बी, सुडौल और पतली होती हैं; पानी वे 30 मील प्रति घंटे की गति से चल सकती हैं। वे गहरे पानी में गड़गड़ाहट की आवाज़ें निकालती हैं जिससे वे सैकड़ों मील दूर अन्य व्हेलों के साथ सम्प्रेषन कर सकती हैं। उनका हृदय मोटरगाड़ी के जितना बड़ा होता है, और उनकी कुछ रक्त धमनियां इतनी बड़ी होती हैं कि उनके बीच में से आदमी निकल सकता है। सचमुच में वे विशाल जंतु हैं।

जब हम इन अद्‌भुत जंतुओं पर विचार करते हैं जिन्हें परमेश्वर ने बनाया है, तो हम उसकी महिमा करने से अपने आपको रोक नहीं पाते। क्योंकि वह अपनी सारी सृष्टि के ऊपर शासक है इसलिए हमें भरोसा करना चाहिए कि वह हमारी देखभाल करेगा। डी. स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]होमेर हेली, *ए कॉमेंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 357. [2]फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमेंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमेंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1974), 291. [3]जेम्स बी. प्रिचर्ड, *द एंसिएंट नीयर ईस्ट इन पिक्चरस रिलेटिंग टू द ओल्ड टैस्टामैंट* (प्रिंसटन, न्यू जर्सी: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रैस, 1954), 154 (नम्बर 447)। [4]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमेंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 401. [5]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, दक्षिण कैरोलिना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 334. [6]वहीं, 336. [7]आल्डन, 403. [8]हेयले, 360. [9]जॉन ई. हार्टले, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमेंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 532, एन. 42. [10]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, ऐंड चार्ल्स ए. ब्रिगस, *ए हिब्रू और इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट* (ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रैस, 1968), 42. [11]वहीं, 307. [12]आल्डन, 406. [13]वहीं, 407.